

**भिन्नार्थक** वि. (तत्.) 1. प्रचलित अर्थ की अपेक्षा भिन्न अर्थ प्रकट करने वाला 2. एक ही शब्द के एक से अधिक अर्थ देने वाला जैसे- 'कनक' का एक अर्थ 'सोना' और दूसरा अर्थ 'गेहूँ'।

**भिन्नाश्रयी** वि. (तत्.) विभिन्न आश्रय वाला टि. कुछ जड़ी-बूटियों को अपने जीवन काल में भिन्न प्रकार के परपोशियों की आवश्यकता होती है, ऐसी जड़ी-बूटियों को भिन्नाश्रयी वनस्पति कहते हैं।

**भिलावा/भिलावाँ** पुं. (देश.) औषधी उपयोगी बड़ा वृक्ष टि. इसकी शाखाएँ छोटी, पत्र लंबे और चौड़े, पुष्प पीले रंग के और फल काला होता है, उक्त वृक्ष का फल भी 'भिलावा' कहलाता है, फल विषात्मक है।

**भिल्ल** पुं. (देश.) भील, एक आदिवासी जाति, वनवासी जाति।

**भिशत** पुं. (अर.) स्वर्ग, बहिस्त, जन्नत।

**भिशती** पुं. (देशी.) मशक से पानी ढोने का काम करने वाला व्यक्ति टि. भिशती पानी पिलाने का काम भी करता है और सड़क की धूल बिठाने के लिए पानी भी छिड़कता है, मशक चमड़े का बना हुआ एक लंबा थैला होता है, जो कंधे पर लटक कर हाथों के पास आ जाता है।

**भिषक्** पुं. (तत्.) वैद्य, भेषज आदि का ज्ञाता, चिकित्सक, ऐसा व्यक्ति जो औषधि विज्ञान में निपुण हो।

**भींगना** अ.क्रि. (देश.) 1. पानी अथवा किसी तरल पदार्थ से भीग जाना, आर्द्र होना, तर होना 2. पुलकित होना, गदगद होना 3. मेल-मिलाप या आपसदारी पैदा करना।

**भींचना** स.क्रि. (देश.) 1. खींचना 2. कसकर बाँधना 3. तानना 4. दबाना।

**भीजना** अ.क्रि. (देश.) दे. भींगना, किसी की भावनाओं में बहना।

**भीख** स्त्री. (तद्.) पोषण अथवा जीवन की अन्य आवश्यकताओं के लिए किसी के आगे हाथ

फैलाने का कार्य, दीन भाव से कोई वस्तु माँगने का कार्य, याचना, भिक्षा।

**भीट** पुं. (देश.) उभरी हुई भूमि, समतलता में जमीन का ऊबड़, भीटा।

**भीटा** पुं. (देश.) 1. समतल जमीन पर स्वयं बना हुआ मिट्टी का टीला 2. खेत के बीच में मिट्टी इकट्ठी कर के एक मुंडेर- सी बनाना टि. इस मुंडेर पर पान की खेती की जाती है, जिस भी उत्पादन को पानी की कम आवश्यकता होती है, उस के लिए इसी प्रकार भूमि तैयार की जाती है।

**भीड़** स्त्री. (देश.) बिना नियम अथवा व्यवस्था के, एक ही स्थान पर एकत्र हुआ जन समूह लोगों का जमावड़ा, भारी जन-समूह।

**भीड़तंत्र** पुं. (देश.+तत्.) अनियंत्रित भीड़ का व्यवहार, ऐसे में व्यवहार का अनुमान लगाना असंभव होता है टि. ऐसी भीड़ के प्रायः सभी सदस्य गैर जिम्मेदाराना कार्य करते हैं।

**भीड़न** स्त्री. (देश.) 1. भरने का कार्य 2. मिलाने का कार्य 3. साथ लगने का कार्य।

**भीड़ना** स.क्रि. (देश.) 1. साथ लगाना 2. एक साथ मिलाना 3. खाली स्थान को भरना।

**भीड़भड़क्का** पुं. (देश.) व्यवस्था रहित व्यक्तियों का बड़ा समूह टि. इस समूह का व्यवहार नियंत्रित नहीं होता, भीड़ भड़क्का द्वारा अप्रिय वातावरण उत्पन्न होने की आशंका बनी होती है।

**भीड़भाड़** स्त्री. (देश.) 1. व्यवस्था रहित बड़ा जन समूह, जिस में अप्रियता का अंश तीव्र नहीं होता 2. जन समूह तथा संलग्न सामान टि. 'भीड़' शब्द में मात्र व्यक्तियों की ओर संकेत है, जबकि 'भीड़-भाड़' में व्यक्तियों के अतिरिक्त उनके सामान की भी संकल्पना है।

**भीड़ा** वि. (देश.) अवरोधों के मध्य का संकुचित रास्ता, तंग, पतला रास्ता।